OXFORD ACADEMY

10th Standard Hindi - First Term Examination

Important 4 Marks Expected Questions & Answers

अध्याय 1: खिड़की (लघुकथा - अंजू खरबंदा)

प्रश्न 1 (डायरी लेखन): रेलगाड़ी के अनुभव ने पति (लेखक) को अपने पिता की याद दिलाई। ट्रेन यात्रा के बाद घर पहुँचकर लेखक द्वारा लिखी जाने वाली डायरी तैयार करें।

> 10 अक्तूबर 2026
>
> शनिवार
>
> रात 10:00 बजे
>
> आज की ट्रेन यात्रा मेरे लिए स्मृतियों की एक खिड़की खोल गई। जनरल डिब्बे में शॉल बेचने वाली उस साँवली युवती को देखा। जब पत्नी के थोल मोल करने पर वह 150 रुपये में मान गई, तो उसकी कजरारी आँखों में आई नमी ने मुझे अचानक अपने स्वर्गीय पिता जी की याद दिला दी। जब वे दिनभर रेलगाड़ी में सामान बेचकर थक-हारकर घर लौटते थे, तब उनकी आँखों में भी ठीक वही नमी होती थी। आज समझ आया कि अपनी आजीविका चलाने के लिए एक गरीब और इंसान को कितना संघर्ष करना पड़ता है।

प्रश्न 2 (शीर्षक का औचित्य): 'खिड़की' कहानी के शीर्षक का औचित्य समझाते हुए एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

> **'खिड़की' शीर्षक का औचित्य:**
>
> अंजू खरबंदा द्वारा रचित लघुकथा 'खिड़की' का शीर्षक अत्यंत सार्थक और प्रतीकात्मक है। कहानी में 'खिड़की' केवल रेलगाड़ी का एक भौतिक हिस्सा नहीं है, बल्कि यह अतीत की स्मृतियों और मानवीय संवेदनाओं को देखने का एक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।
>
> ट्रेन की खिड़की से बाहर देखते हुए लेखक अतीत में चले जाते हैं और उन्हें अपने पिता के जीवन का कठोर मेहनत याद आ जाता है। अतः 'खिड़की' शीर्षक पूर्णतः सटीक एवं औचित्यपूर्ण है।

प्रश्न 3 (पत्र लेखन): ट्रेन यात्रा के अनुभव और शॉल बेचने वाली लड़की के प्रसंग का वर्णन करते हुए लेखक द्वारा अपने मित्र को लिखा जाने वाला पत्र तैयार करें।

> स्थान:
>
> दिनांक:
>
> प्रिय मित्र रमेश,
>
> सप्रेम नमस्ते।
>
> आशा है तुम सकुशल होगे। हाल ही में मैंने होशियारपुर की ट्रेन यात्रा की। इस बार ए सी के बजाय जनरल कोच से सफ़र करने का निर्णय लिया। यात्रा के दौरान एक शॉल बेचने वाली युवती आई। मेरी पत्नी ने उससे थोल मोल करके 250 की शॉल 150 रुपये में ले ली।
>
> शॉल बेचते समय जब उस युवती की आँखें भर आईं, तो मुझे अपने पिता जी के कड़े मेहनत की याद आ गई। इस यात्रा ने मुझे सिखाया कि छोटी-छोटी चीज़ों में आम आदमी की कितनी मेहनत छिपी होती है। समय मिले तो पत्र का उत्तर ज़रूर देना।
>
> तुम्हारा मित्र,
> अंजू
>
> **सेवा में**
> नाम
> पता

प्रश्न 4 (चरित्र चित्रण): 'खिड़की' कहानी के आधार पर शॉल बेचने वाली युवती की चारित्रिक विशेषताएँ लिखें।

> **शॉल बेचने वाली युवती का चरित्र चित्रण:**
>
> 'खिड़की' लघुकथा में शॉल बेचने वाली युवती एक मुख्य और प्रभावी पात्र के रूप में उभरती है।
>
> **1.** वह परिश्रमी और आत्मविश्वासी है। वह अपनी आजीविका चलाने के लिए भारी गठर उठाकर रेलगाड़ी में मेहनत से शॉल बेचती है। वह यात्रियों से बहुत ही आदर और आग्रह के साथ बात करती है ("दीदी! जम्मू की शॉल ले लो!")।
>
> वह लाचार और संवेदनशील है। जब लेखक की पत्नी अत्यधिक थोल मोल करती है (250 की जगह 100 रुपये), तो उसका गला रुँध जाता है और आँखों में नमी आ जाती है, जो उसकी गरीबी और मजबूरी को दर्शाती है।

बातचीत (संवाद लेखन / Dialogue Writing) – [अंक: 4]

प्रश्न 5: (थोल मोल और संवेदना पर बातचीत)

प्रसंग: ट्रेन यात्रा के दौरान शॉल बेचने वाली लड़की के चले जाने के बाद लेखक और उनकी पत्नी के बीच हुई बातचीत (संवाद) तैयार करें।

उत्तर:

पत्नी : देखो जी! 250 रुपये की शॉल मैंने केवल 150 रुपये में ले ली। कितना अच्छा सौदा रहा ना?

पति : तुम खुश हो सकती हो, लेकिन क्या तुमने उस बेचारी लड़की की आँखों में आँसू देखे?

पत्नी : *(चौंककर)* आँसू? मैंने तो ध्यान ही नहीं दिया। पर उसने 150 रुपये में शॉल दे तो दी।

पति : उसने मजबूरी में दी है। तुमने अत्यधिक मोल-भाव करके उसका स्वाभिमान और मेहनत दोनों तोड़ दिए।

पत्नी: मुझे सचमुच इसका अहसास नहीं हुआ था। मुझे इतना मोल-भाव नहीं करना चाहिए था।

पति : उस लड़की की आँखों की नमी ने मुझे अपने स्वर्गीय पिता जी की याद दिला दी।

पत्नी: पिता जी की याद? इस लड़की से उनका क्या संबंध?

पति : मेरे पिता जी भी रेलगाड़ी में सामान बेचा करते थे। जब वे थक-हारकर घर लौटते थे, तब उनकी आँखों में भी वही नमी होती थी।

पत्नी: अच्छा! अब मैं समझी कि आप उस लड़की को देखकर इतने भावुक क्यों हो गए थे।

पति : हाँ, आज मुझे समझ आया कि आजीविका चलाने के लिए एक गरीब इंसान को कितना कठिन मेहनत करना पड़ता है।

OXFORD

2. पटकथा (Screenplay Scene / Patkatha) – [अंक: 4]

प्रश्न 6: (ट्रेन के डिब्बे का दृश्य - शॉल बेचना और मोल-भाव)

प्रसंग: 'खिड़की' कहानी के उस अंश की पटकथा लिखें, जब शॉल बेचने वाली लड़की ट्रेन के डिब्बे में आती है और लेखक की पत्नी उससे मोल-भाव करती है।

उत्तर:

दृश्य - *एक*

स्थान: होशियारपुर जाने वाली रेलगाड़ी का जनरल डिब्बा ।

समय: सुबह नौ बजे

पात्र: पति: लगभग 40 साल का आदमी (कुर्ता और पतलून पहना है)

पत्नी : लगभग 35 साल की औरत (साड़ी पहनी है)

शॉल बेचने वाली साँवली युवती : लगभग 20 साल की युवती (चूड़ीदार पहनी है)।,

दृश्य का विवरण : ट्रेन के डिब्बे में यात्रियों की चहल-पहल है। पति और पत्नी पास- पास बैठे हैं। शॉल का भारी गठर लिए एक साँवली युवती अंदर आती है।)

संवाद :

युवती: दीदी ! जम्मू की शॉल ले लो! बहुत बढ़िया है।

पत्नी: कितने की है यह शॉल?

युवती: दीदी! यह केवल 250 रुपये की है।

पत्नी: *(अविश्वास से)* 250 रुपये? बहुत महँगी है। 100 रुपये में देनी हो तो बताओ।

युवती: *(उदास होकर)* सौ तो बहुत कम हैं। थोड़ा तो बढ़ा लीजिए।

पत्नी: ठीक है, 150 रुपये दूँगी।

युवती: ठीक है दीदी, दे दो..।

(युवती 150 रुपये लेकर भारी मन से शॉल देती है और नम आँखों से आगे बढ़ जाती है। लेखक उसे जाते हुए देखते रहते हैं।)

अध्याय 2: हाइकु

प्रश्न 1:

“ सूखा या बाढ़
साहब के आँगन
सदा फुहार “

आशय:

इस हाइकु में कवयित्री डॉ. सुरंगमा यादव कहती हैं कि गरीब और आम आदमी के जीवन में हमेशा मुसीबतें (सूखा या बाढ़) आती रहती हैं। लेकिन अमीर लोगों (साहब) के घर में हमेशा सुख-सुविधा और खुशहाली (फुहार) बनी रहती है।

प्रश्न 2:

“ पिता ने ढूँढ़ीं
लाठियाँ बुढ़ापे की
दीखती नहीं “

आशय:

इस हाइकु में कवि डॉ. गोपाल बाबू शर्मा कहते हैं कि एक पिता अपने बच्चों को बड़े प्यार से पालता है ताकि वे बुढ़ापे में उसका सहारा बनें। लेकिन बुढ़ापा आने पर जब बच्चे पिता को छोड़ देते हैं, तो पिता को अपना कोई सहारा (लाठी) दिखाई नहीं देता।

प्रश्न 3:

“ ढूँढ़ती रही
बर्फीली नगरी में
नेह की आँच “

आशय:

इस हाइकु में कवयित्री कमला निखुर्पा कहती हैं कि आज की दुनिया बहुत स्वार्थी और दयाहीन (बर्फीली नगरी) बन गई है। ऐसे माहौल में कवयित्री सच्चा प्यार और अपनापन (नेह की आँच) ढूँढ़ने की कोशिश कर रही हैं।

OXFORD

अध्याय 3: रैन बसेरे में... (यात्रावृत्त - अमृतलाल वेगड़)

प्रश्न 1 (पटकथा लेखन): 'रैन बसेरे में...' पाठ के उस प्रसंग पर पटकथा का दृश्य लिखें, जब पागल व्यक्ति रात को मंदिर में आकर यात्रियों से ऊलजलूल बातें करता है।

> दृश्य - एक
>
> स्थान: पथोड़ा गाँव के मंदिर का बरामदा
>
> समय: रात 10 बजे
>
> पात्र: लेखक (अमृतलाल वेगड़) : लगभग 60 साल का आदमी (कुर्ता और धोती पहना है)
> छोटू : लगभग 20 साल का युवक (कुर्ता और पतलून पहना है)
> पागल व्यक्ति : लगभग 40 साल का आदमी (कुर्ता और धोती पहना है)
>
> **दृश्य का विवरण** : लेखक और छोटू दरी पर लेटे हैं। अचानक एक पागल व्यक्ति गुस्से में अंदर आता है और चिल्लाने लगता है।
>
> ## संवाद :
>
> पागल आदमी: कौन हो तुम लोग? यहाँ कैसे घुस आए हो?
>
> लेखक: जिन्होंने यह मंदिर बनवाया है, उन्होंने ही हमें यहाँ ठहराया है। यह दरी और बाल्टी भी उन्होंने दी है।
>
> पागल आदमी: मैं सी.आई.डी. इंस्पेक्टर हूँ! सादे भेष में चोरों का पता लगाता हूँ। इस पिठू में क्या है? मुझे इसकी तलाशी लेनी होगी!
>
> लेखक: इसमें हमारी किताबें और सामान है।
>
> (पागल आदमी बैग से सामान और किताबें निकालता है। लेखक को शिक्षक जानकर उसके व्यवहार में बदलाव आता है और वह शांत हो जाता है।)

प्रश्न 2 (बातचीत / संवाद लेखन): पागल आदमी के चले जाने के बाद रात में लेखक और उनके साथी छोटू के बीच हुई बातचीत लिखें।

> छोटू: भगवान का शुक्र है! हम बच गए। मुझे तो लग रहा था कि यह आज हमें छोड़ेगा नहीं।
>
> लेखक: सही कहा छोटू, मैं भी बहुत डर गया था। लेकिन देखो, उसने हमारी किसी चीज़ को चोरी नही की।
>
> छोटू: हाँ सर! उसने तो आपके पैर भी दबाए और मुट्ठी में बीस पैसे का सिक्का भी रख दिया। यह बदलाव

> कैसे आया?
>
> लेखक: जब उसे पता चला कि मैं एक शिक्षक हूँ, तो उसके अवचेतन मन में गुरु के प्रति आदर का संस्कार जाग उठा।
>
> छोटू: सचमुच सर, आपके शिक्षक होने के नाते ही आज हमारी रक्षा हो सकी।

प्रश्न 3 (डायरी लेखन): पागल व्यक्ति द्वारा सुबह माफ़ी माँगने और पैर छूने पर लेखक द्वारा लिखी जाने वाली डायरी तैयार करें।

> 12 अक्तूबर 1997
>
> रविवार
>
> रात 9:00 बजे
>
> आज का दिन मेरे जीवन के अविस्मरणीय दिनों में से एक बन गया। कल रात पथोड़ा गाँव के मंदिर में एक पागल आदमी ने हमें बहुत डराया था। लेकिन जब उसे मालूम हुआ कि मैं एक शिक्षक हूँ, तो उसके मन में गुरु के प्रति आदर जाग उठा। उसने मेरे पैर दबाए और मुट्ठी में बीस पैसे का सिक्का रख दिया।
>
> आज सुबह जब हम वहाँ से निकलने लगे, तो उसने घुटनों के बल झुककर मेरे पाँव छू लिए। उसकी आँखों में आँसू थे और चेहरे पर पछतावा था। उसने कहा, "गुरुदेव! बहुत शर्मिंदा हूँ, दौरा जो पड़ा था।" पागलपन की हालत में भी उसके अंदर गुरु का आदर बचा हुआ था। उस रात मिला यह अपूर्व सम्मान मैं ज़िंदगी भर नहीं भूल सकता।

प्रश्न 4: पागल आदमी (विक्षिप्त व्यक्ति) की चरित्रगत विशेषताएँ लिखिए।

<u>**पागल आदमी (विक्षिप्त व्यक्ति) - चरित्र चित्रण**</u>

अमृतलाल वेगड़ द्वारा रचित यात्रावृत्त " रैन बसेरे में.." का एक मुख्य पात्र वह पागल आदमी (विक्षिप्त व्यक्ति) है। वह मानसिक रूप से बीमार था और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाता तथा लोगों को चाबुक से मारने की धमकी देता था। लेकिन पागल होने के बावजूद वह चोर नहीं था, क्योंकि उसने पिठू खोलकर सामान बिखेर दिया पर किसी की कानी कौड़ी भी नहीं ली।

जब उसे मालूम हुआ कि लेखक एक शिक्षक है , तो उसके मन में गुरु के प्रति आदर जाग उठा। उसने लेखक के पैर दबाए और मुट्ठी में बीस पैसे का सिक्का रख दिया। उसने घुटनों के बल झुककर लेखक के पाँव छू लिए। उसकी आँखों में आँसू थे और चेहरे पर पछतावा था। उसने कहा, "गुरुदेव! बहुत शर्मिंदा हूँ, दौरा जो पड़ा था।" पागलपन की हालत में भी उसके अंदर गुरु का आदर बचा हुआ था।

संक्षेप में, वह बाहर से डरावना और विक्षिप्त दिखता था, लेकिन अंदर से एक सच्चा, संस्कारी, ईमानदार और गुरु का आदर करने वाला इंसान था।

प्रश्न 5 : 'रैन बसेरे में...' पाठ के आधार पर विद्यालय की हिंदी सभा की ओर से "शिक्षक दिवस" समारोह के लिए एक आकर्षक पोस्टर तैयार कीजिए।

सरकारी हाई स्कूल, कोझिकोड

5 सितंबर
शिक्षक दिवस समारोह

“ गुरु का आदर, जीवन का आधार! ”

- विक्षिप्त मन में भी गुरु के प्रति आदर का संस्कार सुरक्षित रखना।
- शिक्षकों का सम्मान करना और उनका आशीर्वाद पाना।

दिनांक : 5 सितंबर 2026

समय : सुबह 10:00 बजे

स्थान : विद्यालय सभागार

आयोजक : हिंदी सभा, सरकारी हाई स्कूल

अध्याय 4: मेरी दुनिया के तमाम बच्चे (कविता - अदनान कफ़ील 'दरवेश')

प्रश्न 1 (आस्वादन टिप्पणी): 'मेरी दुनिया के तमाम बच्चे' कविता की आस्वादन टिप्पणी लिखें।

आस्वादन टिप्पणी: मेरी दुनिया के तमाम बच्चे

'मेरी दुनिया के तमाम बच्चे' अदनान कफ़ील 'दरवेश' की एक बहुत सुंदर कविता है। इस कविता का मुख्य विषय बच्चों का निष्पाप मन, भाईचारा और शांति है। कवि कहते हैं कि बच्चे युद्ध, सीमा और नफ़रत को नहीं मानते।

बच्चे दुनिया में केवल शांति और अहिंसा चाहते हैं। वे युद्ध के हथियारों जैसे टैंकों में बालू भर देंगे और बंदूकों को मिट्टी में दबा देंगे। बड़ों ने जिन लोगों से नफ़रत करना सिखाया है, बच्चे उन सभी से प्यार करेंगे। दीवारों में छेद करके देखना यह दिखाता है कि बच्चे दो देशों के बीच की नफ़रत मिटाकर प्रेम फैलाना चाहते हैं।

आज की युद्ध से भरी दुनिया में यह विचार बहुत प्रासंगिक है। कविता की भाषा बहुत सरल है। यह कविता हमें एक शांतिपूर्ण और सुंदर भविष्य की उम्मीद देती है।

OXFORD

प्रश्न 2: 'मेरी दुनिया के तमाम बच्चे' कविता के आधार पर विद्यालय की साहित्य परिषद की ओर से आयोजित "विश्व शांति दिवस" समारोह के लिए एक आकर्षक पोस्टर तैयार कीजिए।

सरकारी हाई स्कूल, कोझिकोड

21 सितंबर

विश्व शांति दिवस

" नफ़रत छोड़ो, प्रेम फैलाओ! "

मुख्य संदेश :

- **युद्ध नहीं, शांति चाहिए!**
- **बंदूकों को मिट्टी में दबाओ, प्यार का संदेश फैलाओ।**
- **सीमाओं की दीवारें तोड़ो, भाईचारा बढ़ाओ।**

स्थान: विद्यालय सभागार
दिनांक: 21 सितंबर 2026
समय: प्रातः 10:00 बजे

आयोजक: साहित्य परिषद, सरकारी हाई स्कूल